भूमिका

साहित्य समाज का दर्पण है, ऐसे में साहित्य और समाज के अन्योन्याश्रित संबंध से इंकार नहीं किया जा सकता ।

13वीं सदी से शुरू हुई सूफी काव्य की यह परंपरा अपने समाज के तटस्थ मूल्यांकन के लिए पुनरीक्षण की मांग करती है। इन मूल्यांकनों का विश्लेषण करके तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व सांस्कृतिक ताने-बाने का अद्भुत कोलार्ज खींचा जा सकता है।

सामाजिक ताने-बाने की अनेक चर्चायें साहित्य में अलग-अलग काल में अलग-अलग तरीके से हमें देखने को मिलती है, हिन्दी साहित्य के विकासक्रम में 13वी सदी में सूफी कवि हमारे सम्मुख आता है, जो आज तक महत्वपूर्ण है। वह एक तरफ समाज की महत्वपूर्ण इकाई स्त्री को देवत्व का सिंहासन अर्पित करता है तो वहीं दूसरी तरफ समाज में प्रचलित लोकभाषा, सामाजिक स्वीकृति के विभिन्न स्तरों एवं सामाजिक रूढ़ियों की ताजी बानगी प्रस्तुत करता है।

सूफी प्रेमाख्यानों की तरफ मेरा रुझान परास्नातक की पढ़ाई के दौरान हुआ, स्नातकोत्तर में पद्मावत के अध्ययन के दौरान मैंने चंदायन का भी अध्ययन किया । इसी बीच मेरा ध्यान अलग-अलग भाषा के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन की ओर गया और मैंने मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह की मूल प्रकृति और सामाजिक उन्मुखता में बहुत कम तात्विक भेद पाया।

अगर हम साहित्य का अध्ययन यदि बिना किसी चौखटे में बंधकर करेंगे तो कई नवीन चीजों की उपस्थिति सामने हो सकती है।

लघु शोध-प्रबंध हेतु मेरा प्रस्तावित शोध-विषय 'मुल्ला दाऊद और बुल्ले शाह के काव्य में अभिव्यक्त समाज' है । जिसमें मैंने सूफी साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन को प्रस्तुत किया है । मेरे विषय के विशेष संदर्भ मुल्ला दाऊद और बुल्ले शाह हैं । मुल्ला दाऊद के लिए मैंने मौलाना दाऊद या दाऊद संज्ञा का प्रयोग जहां-तहां किया है, क्योंकि दाऊद को मौलाना की उपाधि प्राप्त थी, इस मौलाना का 'मुल्ला' अशुद्ध शब्द इनके लिए सर्वविदित है। परंतु इसकी पुष्टि मेरे आधार ग्रंथ चांदायन के संपादक ने अपने द्वारा संपादित पाठ की भूमिका में कर दी है। इतना ही नहीं विभिन्न आलोचकों ने इन्हें मौलाना दाऊद या दाऊद कहकर संबोधित किया है जिनमें ज्ञान चन्द्र शर्मा, बैकुंठ राय, उमापतिराय चंदेल, श्याम मनोहर पाण्डेय प्रमुख हैं।

मेरा लघु शोध-प्रबंध तीन अध्याय में विभाजित है। जिनमें प्रथम अध्याय को 'सूफी साहित्य और समाज' का नाम देकर मैंने उसके तीन खण्डों क्रमशः 'सूफी साहित्य और समाज, सूफी साहित्य की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि तथा मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह कालीन समाज' के माध्यम से साहित्य की सामाजिक ज़िम्मेदारी को अभिव्यक्त करते हुए सूफी साहित्य की ऐतिहासिक व सामाजिक पृष्ठभूमि और दाऊद तथा बुल्ले शाह के समाज का चित्रण किया है।

द्वितीय अध्याय मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह के काव्य में अभिव्यक्त समाज अध्याय को चार खण्डों लोकजीवन, स्त्री-जीवन, जातिव्यवस्था तथा रूढ़ि और परंपरा में वर्गीकृत किया है। ये चार खण्ड दोनों के काव्य में समाज के सुंदर-असुंदर सच को दिखाते हैं। मौलाना दाऊद और बुल्ले शाह का साहित्य किस तरह लोक के बीच पुष्पित व पल्लवित होता है और किस तरह लोकानुरूप परिवर्तित होता है उसकी उपस्थिति इस अध्याय में है।

तृतीय अध्याय में दाऊद और बुल्ले शाह के काव्य का शैली पक्ष द्वारा भाषाई विशेषता को समझने का प्रयत्न किया है अन्य सूफी काव्यों से इनकी विशिष्टता समाज के साथ एकमेव इनकी भावुकता को दर्शाती है।

लघु शोध-प्रबंध में अपनी सीमाओं के बावजूद भी अपने पूरे प्रयास एवं मनोयोग से इस शोध को मैंने पूरा किया है। अपने इस "मुल्ला दाऊद और बुल्ले शाह के काव्य में अभिव्यक्त समाज" विषयक लघु शोध-प्रबंध को सम्पन्न करने में डॉ.रूपेश कुमार सिंह का शोध निर्देशक के रूप में मुझे महत्वपूर्ण योगदान मिला। उनका मैं हृदय के अंतरतम कोनों से आभारी हूँ।

मेरी माँ और मेरे भाई ने तमाम झंझावातों को सहन कर मुझे यहाँ तक पहुंचाया और हमेशा मुझ पर भरोसा रखा, यह लघु शोध उसी का प्रतिफल है इस शोध को सम्पन्न करने में मेरे मित्रों जय प्रकाश पाण्डेय, गुंजन गुप्ता, अनु सुमन बड़ा, गणेश गुप्ता, गरिमा दी, सुंदरम सांडिल्य का योगदान मैं कभी नहीं भूल सकता और भी बहुत से लोग जिन्होंने जाने अनजाने में मेरी मदद की उनके प्रति भी मैं आभार

व्यक्त करता हूँ। अपने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय कर्मियों का एवं हिंदी विभाग का विशेष रूप से धन्यवाद करना चाहूँगा।

-गौरव वर्मा